A Pratibha Spandan's Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

बनारस घराना - ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में

Rajneesh Kumar Tiwari1, Dr. Chandan Vishwakarma2

1 Research Scholar, Department of Instrumental Music, Banaras Hindu University, Varanasi
2 Assistant Professor, Department of Instrumental Music, Banaras Hindu University, Varanasi

OPEN ACCESS

सारांश

यह शोध-पत्र बनारस घराने की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा सांगीतिक परंपरा का विश्लेषण करता है। बनारस (वाराणसी) का सांस्कृतिक इतिहास वैदिक काल से प्रारंभ होकर आधुनिक समय तक संगीत और कला के केंद्र के रूप में विकसित हुआ है। पं. राम सहाय द्वारा 19वीं शताब्दी में स्थापित बनारस घराना तबला वादन की एक विशिष्ट शैली के रूप में उभरा, जिसमें दिल्ली, लखनऊ और पंजाब घरानों की शैलियों का समन्वय देखा जाता है। इस घराने की वादन शैली में लय की स्पष्टता, शक्ति, भक्ति और सौंदर्य का अद्भुत संगम होता है। शोध में पं. राम सहाय, पं. सामता प्रसाद मिश्र, पं. किशन महाराज जैसे महान कलाकारों के योगदान को रेखांकित किया गया है। इसके अतिरिक्त, शिक्षा और संस्थागत विकास में बनारस घराने की भूमिका, जैसे कि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में संगीत संकाय की स्थापना और संगीत पीठ के निर्माण, पर भी प्रकाश डाला गया है। यह लेख बनारस घराने की परंपरा को समझने और सराहने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द- *बनारस घराना, पं. राम सहाय, तबला वादन शैली, गुरु-शिष्य परंपरा, संगीत शिक्षा, सांस्कृतिक विरासत*

प्रस्तावना

भारतीय संगीत की परंपरा में 'घराना' शब्द उस शैली और परंपरा को सूचित करता है जो किसी विशेष स्थान, गुरु या परिवार से विकसित हुई हो। बनारस घराना, विशेष रूप से तबला वादन में, अपनी अनोखी रचनात्मकता, सौंदर्यबोध और शक्ति के लिए प्रसिद्ध है। इस शोध का उद्देश्य बनारस घराने के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और शास्त्रीय योगदान को रेखांकित करना है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

बनारस (जिसे आज वाराणसी कहा जाता है) भारत का एक प्राचीन सांस्कृतिक और धार्मिक नगर है, जिसे विश्व के सबसे प्राचीन सतत् आवासीय नगरों में गिना जाता है। इसकी ऐतिहासिक पहचान वैदिक युग से लेकर आधुनिक काल तक संगीत, कला, और धर्म के केंद्र के रूप में बनी रही है। बनारस की भौगोलिक स्थिति गंगा नदी के किनारे अर्द्धचंद्राकार में बसी हुई इस शहर को सांस्कृतिक और धार्मिक गतिविधियों के लिए आदर्श स्थल बनाया। बौद्ध काल से ही यहाँ संगीत और कला की उच्च परंपराएँ रही हैं। जातक कथाओं में उल्लेख मिलता है कि काशी राज ब्रह्मदत्त के शासन काल में संगीतकारों का सम्मान होता था और संगीत शिक्षालय भी विद्यमान थे (Mishra, 2023)। इसके अतिरिक्त, नगरवधुओं जैसे चित्रलेखा और श्यामा द्वारा प्रस्तुत संगीत-नृत्य कार्यक्रम सामाजिक रूप से सम्मानित और लोकप्रिय थे।

मध्यकाल में वाराणसी को अनेक आक्रमणों का सामना करना पड़ा, लेकिन इसके बावजूद यह नगर सांस्कृतिक रूप से जीवित रहा। मुगल काल में भी यह नगर संगीत साधना का प्रमुख केंद्र बना रहा। बनारस के शासकों, विशेषतः काशी नरेशों, ने संगीतज्ञों को दरबारी संरक्षण प्रदान किया जिससे यह परंपरा निरंतर पुष्पित होती रही। 18वीं और 19वीं शताब्दी में बनारस घराने की स्थापना और विकास इस सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में हुआ। पं. राम सहाय द्वारा बनारस घराने की नींव रखना इस परंपरा के एक महत्वपूर्ण अध्याय का प्रारंभ माना जाता है (Roach, 1995)। उनके बाद यह घराना अनेक विद्वान संगीतकारों की साधना और संरक्षण से समृद्ध होता गया। इस प्रकार, बनारस की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परंपरा ने बनारस घराने की स्थापना और विकास के लिए एक गहन और उपयुक्त आधार प्रदान किया।

स्थापना और विकास

बनारस घराने की स्थापना 19वीं शताब्दी के प्रारंभ में पंडित राम सहाय मिश्र (1780–1826) द्वारा की गई थी। बनारस (वर्तमान वाराणसी) में जन्मे पं. राम सहाय ने संगीत की प्रारंभिक शिक्षा अपने परिवार से प्राप्त की, जो स्वयं संगीत व्यवसाय से जुड़ा था (Mishra, 2023)। उन्होंने बहुत कम उम्र में तबला वादन में दक्षता प्राप्त कर ली थी और बाद में लखनऊ जाकर उस समय के प्रसिद्ध उस्ताद मोदू खाँ (मोंदू खाँ) के शिष्य बने। उस्ताद मोदू खाँ, दिल्ली घराने के संस्थापक उस्ताद सिद्धार खाँ के वंशज थे, जिनकी वादन शैली में सख्ती और रचनात्मकता का समन्वय था (Roach, 1995)। राम सहाय ने लगभग 12 वर्षों तक लखनऊ में शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत लखनऊ दरबार में एक ऐतिहासिक जलसे में सात दिनों तक

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

एकल तबला वादन की प्रस्तुति दी। उस प्रस्तुति ने उन्हें भारतीय संगीत जगत में ख्यातिप्राप्त कर दिया। नवाब गाज़ीउद्दीन हैदर द्वारा आयोजित उस जलसे में, उन्हें न केवल विशेष उपाधियाँ और सम्मान प्राप्त हुआ, बल्कि सभी घरानों के वरिष्ठ विद्वानों ने अपनी विशेष रचनाएँ उन्हें समर्पित कीं (Mistri, 2000)।

वाराणसी लौटने के बाद, पं. राम सहाय ने तबला वादन की विभिन्न शैलियों जैसे- दिल्ली, लखनऊ और पंजाब के तत्वों को आत्मसात करते हुए एक नवीन शैली का विकास किया, जो आज 'बनारस बाज' के नाम से प्रसिद्ध है। यह शैली विशिष्ट रूप से लयात्मक, भावप्रवण और शक्तिशाली है। बनारस घराना न केवल तकनीकी रूप से उन्नत है, बल्कि इसकी शैली में भक्ति, रस, और सौंदर्य का गूढ़ समावेश भी पाया जाता है (Sankritayan, 2018)। बनारस घराने की स्थापना के साथ ही, पं. राम सहाय ने अपनी वंश एवं शिष्य परंपरा की नींव रखी। उन्होंने अपने अनुज गौरी सहाय के पुत्र पं. भैरव सहाय सहित पाँच प्रमुख शिष्यों को प्रशिक्षित किया, जिन्हें "पंच प्यारे" कहा जाता है। इस परंपरा में बाद के वर्षों में पं. प्रताप महाराज, पं. सामता प्रसाद मिश्र, पं. किशन महाराज आदि जैसे महान कलाकार उत्पन्न हुए, जिन्होंने इस घराने की कीर्ति को वैश्विक स्तर तक पहुँचाया (Mishra, 2023; Sharma, 1997)।

प्रमुख लक्षण और विशिष्टता

बनारस घराने की शैली में तबले के बोलों में शक्ति, लय की स्पष्टता, और सौंदर्य का अद्वितीय मेल होता है। इसके अलावा फर्द, कायदा, रेला, और टुकड़ा जैसे अंगों में भी बनारस बाज की विशेषता देखी जाती है (Mistri, 2000)। इस घराने के कलाकार संगति और एकल वादन दोनों में पारंगत होते हैं। बनारस घराना तबला वादन की एक अनूठी शैली है जिसे उसकी ऊर्जस्विता, लय की जटिलता, और सौंदर्यात्मक प्रस्तुति के लिए जाना जाता है। इसके प्रमुख लक्षण निम्नलिखित हैं:

1. **लय की स्पष्टता और संतुलन**

बनारस घराने की वादन शैली में लय की स्पष्टता अत्यंत महत्त्वपूर्ण मानी जाती है। वादक प्रत्येक मात्रा को एक तरह की मूर्तता प्रदान करता है जिससे संपूर्ण प्रस्तुति जीवंत प्रतीत होती है। विशेष रूप से "ठेका" और "सम" पर विशेष ज़ोर दिया जाता है।

2. **शक्तिशाली और पुरुषार्थप्रधान वादन**

बनारस घराने की तबला शैली को "पुरुषार्थप्रधान" वादन कहा जाता है क्योंकि इसमें थापों की गूंज, बोलों की स्पष्टता और संयोजन की शक्ति अधिक होती है। विशेष रूप से "कायदा" और "रेला" जैसे अंगों में शक्ति और गतिशीलता का अद्वितीय संतुलन देखने को मिलता है (Mistri, 2000)।

3. **"फर्द" की परंपरा**

यह घराना "फर्द" नामक रचना के लिए प्रसिद्ध है जो तबला वादन में एक विशेष बंदिश होती है। पं. बैजू महाराज और उनके वंशजों द्वारा इस शैली को विकसित किया गया जिससे वादन में एक कथात्मकता और रंगत आई (Mishra, 2023)।

4. **एकल वादन में निपुणता**

बनारस घराना एकल वादन के लिए विशेष रूप से जाना जाता है। वादक लंबी प्रस्तुतियों में विभिन्न बोलों के माध्यम से श्रोताओं को भावविभोर कर देते हैं। सात दिनों तक चलने वाले नवाबीय दरबारों में पं. राम सहाय द्वारा किए गए प्रदर्शन इसका प्रमाण हैं (Roach, 1995)।

5. **संगति में रंजकता**

यह घराना नृत्य और गायन दोनों के साथ संगति में अपनी रचनाओं को सजाता है। कथक नृत्य के साथ विशेष रूप से इस घराने की ताल शैली घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई है (Sharma, 1997)।

सांस्कृतिक प्रभाव

बनारस घराने ने केवल भारतीय संगीत को ही नहीं, अपितु भारतीय संस्कृति को भी गहराई से प्रभावित किया है। ध्रुपद मेला, संगीत महोत्सव, और मंदिरों में आयोजित संगीत कार्यक्रमों के माध्यम से इस घराने ने काशी की सांस्कृतिक पहचान को समृद्ध किया है (Mishra, 2024)।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

प्रमुख कलाकार और योगदान

बनारस घराने की परंपरा उन दिग्गज कलाकारों से समृद्ध हुई जिन्होंने न केवल तबला वादन की कला को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कीं, बल्कि देश-विदेश में इस शैली को प्रतिष्ठा भी दिलाई।

1. **पं. राम सहाय** (1780–1826)
बनारस घराने की नींव रखने वाले पं. राम सहाय जी ने तबले की एक स्वतंत्र, मौलिक और व्याकरणसम्मत शैली की स्थापना की। उन्होंने सात दिनों तक नवाब ग़ाज़ीउद्दीन हैदर के दरबार में एकल तबला वादन प्रस्तुत कर घराने की मान्यता पाई (Roach, 1995)। वे पंजाब और लखनऊ घरानों की शिक्षा लेकर एक नवीन शैली विकसित करने में सफल रहे।

2. **पं. प्रताप महाराज**
पं. राम सहाय के शिष्य पं. प्रताप महाराज को नेपाल दरबार का संरक्षण प्राप्त था। जनश्रुति है कि उनके कार्यक्रमों के बाद कोई अन्य कलाकार मंच पर नहीं आता था, क्योंकि वे प्रभावी रूप से समापन करते थे। उनकी परंपरा से पं. सामता प्रसाद मिश्र जैसे उच्च कोटि के कलाकार उत्पन्न हुए (Mishra, 2023)।

3. **पं. सामता प्रसाद मिश्र (गुदई महाराज)**
बनारस घराने के सबसे प्रसिद्ध तबला वादकों में गिने जाने वाले पं. सामता प्रसाद मिश्र (1920–1994) की वादन शैली में ओज, लय और विन्यास का अद्भुत मेल था। उन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था और वे देश-विदेश के मंचों पर सक्रिय रहे (Mistri, 2000)।

4. **पं. शारदा सहाय**
बनारस घराने के संस्थापक पं. राम सहाय के प्रत्यक्ष वंशज, पं. शारदा सहाय ने पारंपरिक बनारस तबला बाज की धरोहर को संजोया और विश्व स्तर पर अपनी विलक्षण वादन क्षमता से सभी को मंत्रमुग्ध किया। उन्होंने भारत और पश्चिमी देशों में तबला शिक्षण एवं प्रस्तुति दोनों में महत्वपूर्ण योगदान दिया और बनारस घराने की शैली को एक सशक्त तथा समृद्ध स्वरूप प्रदान किया (Layaloka, n.d.)।

5. **पं. किशन महाराज**
पं. किशन महाराज को बनारस घराने की विरासत को वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित करने का श्रेय दिया जाता है। उनके वादन में गम्भीरता, स्फूर्ति और जटिल तिहाइयों की विशेष भूमिका थी। वे एक साथ नृत्य, गायन, और वादन के लिए संगति में सिद्धहस्त थे (Sharma, 1997)।

6. **पं. अनोखे लाल मिश्र**
तबले में "नाधिंधिंना" जैसी विशिष्ट बोलों की रचना के लिए प्रसिद्ध, पं. अनोखे लाल मिश्र ने घराने को एक सशक्त रचनात्मक स्वरूप प्रदान किया। उनके वाद्य रूपांकन में 'फर्द' और 'कायदा' की अत्यंत मनोहारी प्रस्तुति होती थी (Mishra, 2023)।

7. **पं. राम जी मिश्र**
बनारस घराने के महान तबला वादक पं. राम जी मिश्र की वादन शैली अत्यंत तीव्रता, स्पष्टता और विविधता से परिपूर्ण थी। उनके तालवादन की गहराई और सूक्ष्मता ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। दुर्भाग्यवश, संगीत जगत की कुछ राजनीति के कारण उनका करियर बाधित हुआ, परन्तु उनके दुर्लभ रिकार्डिंग्स में उनकी प्रतिभा की अनूठी चमक स्पष्ट दिखाई देती है (Milesshrewsbery, 2011)।

8. **श्रीमती गिरिजा देवी**
यद्यपि गायन क्षेत्र से थीं, परंतु बनारस घराने की ठुमरी और दादरा की शैली को जनमानस तक पहुँचाने में उनका विशेष योगदान रहा। काशी नरेश द्वारा स्थापित संगीत पीठ की अध्यक्षता करते हुए उन्होंने बनारस घराने की शिक्षण परंपरा को समृद्ध किया।

शिक्षा और संस्थागत योगदान

बनारस घराने ने न केवल सांगीतिक प्रस्तुति के माध्यम से बल्कि संस्थागत शिक्षा के क्षेत्र में भी गहरा योगदान दिया है। यह घराना भारतीय संगीत के औपचारिक शिक्षण में एक उत्प्रेरक की भूमिका निभाता रहा है।

1. **काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में संगीत शिक्षा**

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (BHU) में संगीत संकाय की स्थापना में बनारस घराने का विशेष योगदान रहा। महाराज विभूतिनारायण सिंह ने इस उद्देश्य के लिए भूमि दान की और आर्थिक सहायता भी प्रदान की (Sankritayan, 2018)। पं. ओंकारनाथ ठाकुर और श्रीमती गिरिजा देवी जैसे संगीताचार्य इस संकाय से जुड़े रहे।

2. **संगीत पीठ की स्थापना**

काशीराज न्यास के तत्वावधान में संगीत शिक्षा के लिए 'संगीत पीठ' की स्थापना की गई। इसका उद्देश्य पारंपरिक बनारस शैली की उच्च स्तरीय शिक्षा देना और वरिष्ठ कलाकारों को संरक्षण प्रदान करना था (Mishra, 2023)। पं. महादेव प्रसाद मिश्र और गिरिजा देवी जैसे विद्वानों को इस पीठ पर नियुक्त किया गया।

3. **नवोदित कलाकारों को प्रशिक्षण**

बनारस घराने की परंपरा गुरु-शिष्य परंपरा पर आधारित रही है। यह परंपरा आधुनिक संस्थानों में भी जीवित है, जहाँ शिष्य गुरु के प्रत्यक्ष सान्निध्य में रहकर तबला वादन की जटिलताओं में पारंगत होते हैं। यह तरीका आज भी भारत के विभिन्न संगीत संस्थानों द्वारा अपनाया जा रहा है (Mistri, 2000)।

4. **संगीत समारोहों के माध्यम से शिक्षा**

ध्रुपद मेला, संगीत संध्या, और घराने के वार्षिक समारोह जैसे कार्यक्रम न केवल प्रदर्शन के अवसर होते हैं, बल्कि इनसे युवाओं को सीखने का अवसर भी प्राप्त होता है। पं. सामता प्रसाद मिश्र और पं. किशन महाराज ने ऐसे कई अवसरों पर अपने विद्यार्थियों के साथ मंच साझा किया (Sharma, 1997)।

निष्कर्ष

बनारस घराना न केवल एक सांगीतिक परंपरा है, बल्कि यह भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक भी है। इसकी स्थापना पं. राम सहाय द्वारा की गई एक महान पहल थी, जिसने तबला वादन को एक नई पहचान दी। इस घराने की वादन शैली में शक्ति, सौंदर्य और भक्ति का जो समन्वय देखने को मिलता है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। पं. सामता प्रसाद मिश्र, पं. किशन महाराज जैसे महान कलाकारों ने इसे वैश्विक मंच पर स्थापित किया, वहीं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय और संगीत पीठ जैसे संस्थानों ने इसकी शिक्षण परंपरा को संरक्षित और विकसित किया। बनारस घराने ने न केवल संगीत के माध्यम से श्रोताओं को भावविभोर किया है, बल्कि शिक्षा, परंपरा और सांस्कृतिक आयोजनों के माध्यम से आने वाली पीढ़ियों को भी प्रेरित किया है। इसकी शैली, गुरु-शिष्य परंपरा, और सामाजिक प्रभाव भारतीय संगीत जगत को एक गहरा और व्यापक आयाम प्रदान करते हैं। यह घराना आज भी न केवल बनारस बल्कि समस्त भारत की सांस्कृतिक आत्मा का अभिन्न हिस्सा बना हुआ है।

संदर्भ

Layaloka. (n.d.). Pandit Sharda Sahai. https://layaloka.wordpress.com/pandit-sharda-sahai/

Milesshrewsbery. (2011, November 18). Ramji Mishra. https://milesshrewsbery.wordpress.com/2011/11/18/ramji-mishra/

Mishra, K. N. (2023). काशी की संगीत परंपरा. वाराणसी: संस्कृति प्रकाशन.

Mistri, A. E. (2000). पखावज और तबला के घराने एवं परंपराएँ. दिल्ली: संगीत नाटक अकादमी.

Roach, D. (1995). The Banaras Baj: The Tabla Tradition of a North Indian City. New Delhi: Indira Gandhi National Centre for the Arts.

Roach, D. (1995). The Banaras Baj: The Tabla Tradition of a North Indian City. New Delhi: Indira Gandhi National Centre for the Arts.

Sankritayan, R. (2018). भारतीय संगीत शिक्षा में घरानों का योगदान. लखनऊ: संगीत निकेतन पब्लिशर्स.

Sharma, G. C. (1997). ताल परिचय. बनारस: संगीत भारती प्रकाशन.